मंगल संदेश

समय का चक्र अपनी गति से चल रहा है। सन् 2009 का वर्ष बीत गया और सन् 2010 का सूर्य अपनी अरुणिमा के साथ उदित हो रहा है। भविष्य के लिए आवश्यक है, बुद्धिमान मनुष्य चिन्तन करे कि वह समय का उपयोग कैसे करे? कैसे वह उसे जीये, कैसे वह शांति का विकास करे?

आर्थिक मंदी, आतंकवाद और उग्रवाद जैसी समस्याएं विश्व के सामने आई। विश्व का संचालन करने वाले तंत्र उसका समाधान भी खोजते रहे। गरीबी, बेरोजगारी और भुखमरी जैसी समस्याएं मानवता का उपहास कर रही है। उनके अनेक कारण हो सकते हैं, पर मेरी दृष्टि में इन समस्याओं का मूल कारण है करुणा, संवेदनशीलता और नैतिक मूल्यों का अभाव। अवधारणा ऐसी बन गई है कि जीवन के मूल्य समाप्त हो गये हैं, होते जा रहे हैं। जीवन का मूल्य शांति है। वर्तमान में जितना तनाव है, अशांति है, अतीत के दो हजार वर्षों में भी नहीं दिखाई देती। जीवन की प्राथमिकताएं बदल गई हैं। एकमात्र आर्थिक प्रगति विकास की मिथ्या अवधारणा बन गई है। सर्वांगीण विकास के साथ नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया था। उन्होंने राष्ट्र की आजादी के समय से ही अणुव्रत का प्रचार-प्रसार किया। नैतिकता का सूत्र सामने रखा। समाज में नैतिकता को गौण कर दिया और पदार्थ प्रमुख हो गए। समस्यायें यहीं से बढ़नी प्रारंभ हुई।

वर्तमान में विकास की देन है, इतने पदार्थों का उत्सर्जन जिससे हवा, पानी, पर्यावरण भी प्रदूषित हो रहा है। इस प्रदूषण के कारण शरीर ही नहीं, मन एवं भाव भी प्रदूषित हो रहा है। विकास का पर्यावरण के प्रति संवेदनशील होना अनिवार्य है।

नए वर्ष के नए प्रभात के अवसर पर मैं सभी समर्थ लोगों से यहां तक कि सभी धर्मगुरुओं के सामने यह चिन्तन रखना चाहता हूं कि हम सब विश्व का सबसे बड़ा कारखाना खोलें। वह कारखाना होगा करुणा का कारखाना। यदि हम इस मानवीय समस्या पर गंभीर हों और गंभीर चिन्तन करें तो मुझे नहीं लगता कि इसका समाधान असंभव है।

मैं यह चाहता हूं कि हम सब नए वर्ष के सूर्य को करुणा का अर्घ्य चढ़ाकर विश्व शांति का संकल्प करें।

श्री डूंगरगढ़ (राजस्थान) आचार्य महाप्रज्ञ